Murazar College
Estd.-1989
Murazar, Hojai (Assam)

ISSN 2394-5303

Issue-56, Vol-02 August 2019

Printing Area®

Peer Reviewed International Refereed Research Journal

Principal
MURAZAR COLLEGE
P.O. Murazar
Hojai (Assam)

Editor
Dr.Bapu G.Gholap

Murazar College
Estd.-1989
Murazar, Hojai (Assam)

Cosmos
IMPACT FACTOR
5.395

Indexed

IMPACT 6.039 FACTOR

ISSN 2394-5303

Edit By
Dr. Gholap Bapu Ganpat
Parli Vaijnath, Dist.Beed 431 515
(Maharashtra, India)
Cell : +91 75 88 05 76 95

Publisher & Owner
Archana Rajendra Ghodke
Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh, Tq.Dist.Beed-431 126
(Maharashtra) Mob.09850203295
E-mail vidyawarta@gmail.com
www.vidyawarta.com

₹ 400/-

Principal
MURAZAR COLLEGE
P.O. Murazar
Hojai (Assam)

Murazar College ★ Estd.-1989 ★ Murazar, Hojai (Assam)

आंतरराष्ट्रीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

प्रिंटिंग एरिया

Printing Area International Interdisciplinary Research Journal in Marathi, Hindi & English Languages

August-2019, Issue-56, Vol-02

Editor
Dr. Bapu g. Gholap
(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

Co-Editor
Dr. Ravindranath Kewat
(M.A. Ph.D.)

Printed by Harshwardhan Publication Pvt.Ltd. Published by Ghodke Archana Rajendra & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd ,At Post Limbaganesh Dist,Beed 431122 (Maharashtra) and Editor Dr. Gholap Bapu Ganpat

Reg No U74120 MH2013 PTC 251205

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At Post Limbaganesh Tq Dist Beed
Pin 431126 (Maharashtra) Cell 07588057695 09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com vidyawarta@gmail.com

All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

Principal
MURAZAR COLLEGE
P.O. Murazar
Hojai (Assam)

Murazar College Estd. 1989 Murazar, Hojai (Assam)

14) आगरकरांचे धर्मचिंतन आणि ख्रिस्तीधर्म
डॉ. राजेंद्र साहेबराव धाये & डॉ. सखाराम पंढरीनाथ टकले, जि. जालना ||76

15) स्त्रीभ्रूणहत्या या सामाजिक समस्याची चिकित्सा
प्रा. डॉ. एस. डी. दहिकांबळे, जि. नांदेड ||79

16) शिक्षक व्यावसायिक विकास आणि उत्तरदायित्व
प्रा. डॉ. प्रकाश अ. जगताप, पुणे ||82

17) ग्रामस्वच्छता आणि गांधीविचार
डॉ. बिभीषण करे, नांदेड ||85

18) महाविद्यालयीन ग्रंथालयात सोशल मिडीयाचा प्रभावी वापर
डॉ. ढाकणे बालाजी निवृत्तीराव & शिंदे सिध्दार्थ बाबूराव, जि. परभणी ||89

19) शेती विषयक माहितीच्या समाधानतेचा चिकित्सक अभ्यास : उमरगा तालुका
डॉ. सुनिल पांडूरंग सूर्यवंशी, कोल्हापूर ||92

20) प्रेमनंद गज्वी यांचे ऐतिहासिक संशोधनावर आधारित नाटक 'गांधी–आंबेडकर'
प्रा. डॉ. बाळासाहेब गावडे, जि. बीड ||96

21) हैदराबाद संस्थानातील शिक्षण पध्दती
प्रा. डॉ. टकले सखाराम पंढरीनाथ & प्रा. डॉ. राजेंद्र साहेबराव धाये, जि. जालना ||98

22) गुरू नानकांची मुलतत्वे व शिकवण — एक विचार
प्रा. डॉ. स्वाती नागोराव कुलकर्णी, परभणी ||100

23) छायावाद एवं कवि निराला के काव्य में उभरे विभिन्न दृष्टिकोण
असीम दास, होजाई (असम) ||103

24) कवि श्री निराला की कविताओं में परिलक्षित अरविन्द दर्शन का प्रभाव
Dr. Balaji Naik L., Bangalore ||106

25) सहरिया जनजाति : एक भौगोलिक अध्ययन (मुरैना एवं श्योपुर जिले के विशेष ...
अम्बेडकर जाटव, ग्वालियर (म.प्र.) ||109

26) भारतीय संस्कृति ओर बौद्ध धर्म :— एक अध्ययन
बेबी कुमारी, बोधगया ||113

http://www.printingarea.blogspot.com
www.vidyawarta.com/03

Principal
MURAZAR COLLEGE
P.O. Murazar
Hojai (Assam)

Murazar College
Estd.-1989
Murazar, Hojai (Assam)

ISSN: 2394 5303 | Impact Factor 6.039(IIJIF) | Printing Area® Peer-Reviewed International Journal | August 2019 Issue-56, Vol-02 | 0103

23

छायावाद एवं कवि निराला के काव्य में उभरे विभिन्न दृष्टिकोण

असीम दास
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
मोड़ाझार कलेज होजाई (असम)

****

भूमिका:

आधुनिक काल की अलग पहचान के रूप में छायावाद और इनके प्रमुख कवियों का एक अलगाव स्थिति जरूर है।

लौकिक के जरिए अलौकिक को पहचानना, प्रकृति चित्रण, यर्थाथवाद, सौन्दर्यानुभूति आदि प्रवृतियों से जुड़े इस कालखण्ड के रचनाओं में कुछ नवीनता देखने को मिलते है।

इस कालखण्ड से सम्मिलित कवियों में जयशंकर प्रसाद, सुमित्र नन्दन पंत, सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला, महादेवी वर्मा आदि ने साहित्य के एक विशेष युग को उर्वर किये, जिनका प्रभाव वर्तमान की साहित्य में भी विराजमान है।

सन १९१८ से लेकर १९३८ तक के समय जिन छायावादी कवियों ने साहित्य जगत में एक अलग इतिहास रचना की उनमें सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला की साहित्य ने जरूर एक अलग पहचान रखी।

उनके काव्य में उभरे राजनैतिक, सामाजिक, एवं आर्थिक दशा ही नहीं बल्कि दार्शनिकता का प्रभाव गीतात्मकता और अन्य भाषाओं का प्रभाव भी परिलक्षित होती है।

छायावादः

हिन्दी साहित्य की इतिहास में छायावाद की एक प्रमुख विशेषता रही है। जब हिन्दी साहित्य में द्विवेदीयुगीन इतिवृत्तात्मकता, स्थूल नैतिकता, शुष्क उपदेशत्मकता और गद्यात्मक वर्णात्मकता को हिन्दी के नये कवियों ने अस्वीकार कर दिया। तब इन कवियों ने प्राचीन काव्य विधान को छोड़कर मानवीकरण, प्रतीक-पदधति, प्रस्तुत विधान तथा लाक्षणिक प्रयोग की पद्धति अपनायी। नये भाव-भाषा और अभिनव शिल्प शौली की दृष्टि से बनी इस कविता को छायावाद नाम से अभिहित किया गया।

छायावाद शब्द का अर्थ और इसका प्रयोग किस आधार पर किया गया इस सम्बन्ध में शुक्ल जी का कहना कुछ इस प्रकार है- 'छायावाद शब्द का प्रयोग दो अर्थों में समझाना चाहिए। एक तो रहस्यवाद के अर्थ में, जहाँ उसका सम्बन्ध काव्य- वस्तु से होता है अर्थात जहाँ कवि अनंत और अज्ञात प्रियतम को आलम्बन बनाकर अत्यन्त चित्रमयी भाषा में प्रेम की अनेक प्रकार से व्यंजन करता है ..... छायावाद शब्द का दूसरा प्रयोग काव्य शैली या पद्धति विशेष के व्यापक अर्थ में है। ..... हिन्दी में छायावाद शब्द का जो व्यापक अर्थ रहस्यवादी रचनाओं के सम्बन्ध में भी ग्रहण हुआ, वह इसी प्रतीक शैली के अर्थ में. 'छायावाद' का सामान्यतः अर्थ हुआ, प्रस्तुत के स्थान पर उसकी व्यंजना करने वाली छाया के रूप में अप्रस्तुत का कथन।[१]

छायावाद के कवयित्री महादेवी वर्मा नें प्रकृति प्रेम को आधार मानकर छायावाद के सम्बन्ध में कहा है।- छायावाद ने मनुष्य के हृदय और प्रकृति के उस सम्बन्ध में प्राण डाल दिये जो प्राचीन काल से विंब, प्रतिविंब के रूप में चला आ रहा था और जिसके कारण मनुष्य को अपने दुःख में प्रकृति उदास और सुख में पुलकित जान पड़ती थी।

छायावाद को प्रकृति, कूप आदि में भरे जल की एकरूपती के समान अनेक रूपों में प्रकट एक महाप्राण बन गयी। अतः अब मनुष्य के अश्रु, मेघ के जलकण और पृथ्वी के ओस विन्दुओं का एक ही कारण, एक ही मूल्य है।[२]

छायावाद के प्रतिनिधि कवि सुमित्रानंदन पंत ने इसी तथ्य को उजागर करते हुए स्पष्ट किया है- छायावादी कवियों का अदृश्य प्रियतम कोई मध्ययुगीन ब्रहम की साक्षी स्थिति भर है - छायावादी कवि तो वर्तमान विश्व विकास क्रम में एक नये मूल्य की खोज में रहा, जिसकी प्राप्ति के लिए मानव आत्मा के भीतर वर्तमान संघर्ष चल रहा है।[३]

वस्तुत जिस काव्य धारा ने मनुष्य को प्राकृतिक चेतना के साथ अविच्छिन्न सम्बन्ध स्थापित करने का कार्य किया वही छायावाद है।

मूलतः किसी वस्तु में अज्ञात प्राणवान छाया का आरोप करना ही छायावाद है। जहाँ शुकलजी ने छायावाद का मूल्यांकन एक काव्यधारा के रूप में नहीं, अपितु चित्र भाषा-शैली के रूप में किया है वही डा० नगेन्द्र ने छायावाद को स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह मानते हुए विद्रोह की ही उसका मूल स्वर स्वीकार किया है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी ने छायावाद के मूल में पाशचात्य रहस्यवादी भावना को मानते है। उनके अनुसार छायावाद के कुछ

Principal
MURAZAR COLLEGE
P.O. Murazar
Hojai (Assam)

Murazar College Estd.-1989 Murazar (Assam)

विद्वान इस प्रकार है: छायावादी काव्य में रहस्यवादी प्रवृत्ति रहते हैं। साथ ही इन कविताओं में शैली शिल्प एवं अभिव्यंजना पद्धति में कुछ नवीनता दिखाई पड़ती है। मूलतः प्रेम, प्रकृति एवं मानव सौन्दर्य की स्वानुभूतिमयी रहस्यपरक एवं प्रतीकात्मक शैली जिस काव्य में होती है वही छायावाद है।

छायावादी काव्य विषय वस्तु एवं शैली दोनों ही दृष्टियों से अपने पूर्ववर्ती काव्य से कुछ अलग हो महत्व रखती है। जहाँ प्रसाद और महादेवी वर्मा आध्यात्मिक चेतना से विनिर्मित पृष्ठभूमी वाले कवि है वही पंत प्रकृतिवादी कवि हुए। पंत जी के अनुसार छायावाद के प्रभाव के तीन कारण रहे:

१. जीवन की वास्तविकता का अभाव।

२. नवयुग की सामाजिक स्थिति के प्रति कवियों की उदासीनता एवं

३. छायावाद के आध्यात्मिकता को समग्र रूप में ग्रहण न किया जा सकना।

संक्षेप में कह सकते है कि छायावादी काव्य वही है जहाँ वास्तविक चित्रपटल पर ध्यान दिया गया हो, मानवीय सौन्दर्य के साथ प्रकृति के मनमोहक रूपों को भी जनमानस के सामने सहज एवं सरल ढंग से उजागर करने की कोशिश की गई हो।

वस्तुतः छायावाद पर विचार करने वाले विविध - आलोचकों ने उसे उपने अपने वातायन से देखने का प्रयास किया है - और इस प्रयास में वे छायावाद को - किसी प्रमुख विशेषता को उसका मूल स्वर मान बैठे हैं। अतः छायावाद एक ऐसा युग है जिस युग को आज तक हर किसी ने सराहा है जहाँ मनुष्य जीवन के हर पहलूओं पर तथा प्रकृति के रम्यता को भी मनमोहक ढंग से प्रस्तुत किया गया हो।

निराला काव्य में उभरे विभिन्न दृष्टिकोण

पहले ही कहा जा चुका है कि हिन्दी साहित्य इतिहास में छायावाद की एक प्रमुख स्थान रही है। छायावादी धारा में जिन कवियों का नाम उल्लेखनीय है उनमें से सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' का नाम भी अन्यतम है।

निराला काव्य में केवल मानवता वाद एवं प्रकृति चित्रण ही नहीं, राजनैतिक, सामाजिक, एवं आर्थिक दशा ही नही बल्कि दार्शनिकता का प्रभाव गीतात्मकता और अन्य भाषाओं का प्रभाव भी उल्लेखनीय है।

आध्यात्मिकता:

निराला जी भावात्मक कवि रहे। यही कारण है कि कभी कभी यथार्थ की कठोर भूमि से उतार कर वे एक ऐसे अतीन्द्रिय जगत में पहुँच जाते हैं जो इस लोक से थोड़ी दुर है।

अनेक अभिनव रूपकों और उपमाओं के माध्यम से 'तुम ब्रह्म' जो जीवन का लक्ष्य है और 'मैं' जीव के सम्बन्ध का वर्णन करते हुए.....अद्वैतवाद अथवा आश्रय आलम्बन की अद्वैतता का प्रतिपादन करते हुए वह कहता है:-

'तुम तुंग हिमालय श्रृंग मैं चंचल गति सुरसरिता
तुम विमल हृदय उच्छवास और मैं कान्त कामिनी कविता।।'

निरालाजी की चिन्तन पद्धति प्रवृत्तिमूलक है। उनकी आध्यात्मिकता विवेकानन्द की भाँति गतिशील है वे अपने दुःखों को माया कहकर टल नहीं देते हैं, वरण संघर्ष करते हुए दिखाई देती है। अतः उन्होंने संघर्ष को जीवन का सार्वस्य मानता है। एक उदाहरण नीचे द्रष्टव्य है:-

'मेरा अन्तर वज्र कठोर,
देना जो भर करा झकझोर,
मेरे दुःख का गहन अन्धतम
निशि ने कभी हो भोर,
क्या होगी इतनी उज्ज्वलता,
क्या वन्दन अभिनन्दन
जीवन चिर कालिक क्रन्दना।' (अनामिका)

मानव जीवन में जय और पराजय, आशा और निराशा सभी प्रकार के क्षण आते है और जाती हैं। कवि ऐसा मानता है कि इन सुख दुःखात्मक अनुभूतियों के मूल में ब्रह्म की ही एकमात्र सत्ता कार्य करता है। कवि की आस्था इन पंक्तियों में देखा जा सकती है:

जीवन की विजय, सब पराजय
चिर अतीत आशा, सुख, सब, भय
सबमें तुम तुममें सब तन्मय

निराला ने उस अलौकिक शक्ति की महिमा को नमन कर संघर्षमय जीवन को ही शाशवत माना।

मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण:-

कविता मूलत हृदय का मुक्तावस्था है और मनोविज्ञान से अर्थ मूलत कवि मन के अध्ययन से होता है। कवि का मन किन परिस्थितियों में उल्लासित हुई या कब वे रो पड़े सब कुछ मनोवैज्ञानिक ही तलाशते हैं। महाकवि 'निराला' को समाज से केवल तिरस्कार ही मिला, अतः समाज से मिलनेवाले लोकनिन्दा और अपमान से भरे उनको मनोदश इन पंक्तियों में दिखाई पड़ती है:

'भले और बुरे की
लोक निन्दा यश कथा की नहीं परवाह मुझे।'

निराला जी के मन की व्यथा तब तक सुनाई नहीं दी जब

तक वे कविता बनकर सामने न आई।

चिन्ता और बाधाओं आती रही फिर भी वह अडिग और अटल बनकर अपनी कर्मजगत पर दृढ़ रहा, उदाहरण:-

चिन्ताएँ - - - बाधाएँ
आती रही हैं - - – आएँ।।

कवि की मनोदशा उस समय बहुत ही कष्टदायक बन गया जब उनकी पुत्री सरोज इस दुनिया से चल बसी। कवि अपने दुःखों को कहना नही चाहता। उसके जीवन की कथा और कुछ नही, केवल दुःख है जिस कथा को आजतक किसी के सामने व्यक्त नहीं किया उसे आज क्या कहे ?

'दुःख ही जीवन की कथा रही
क्या कहूँ आज, जो नही कही।'

अर्थात मनुष्य मात्र के जीवन में दुःख और सुख सहचर के रूप में आते जाते रहते है। चाहे मनुष्य को दुःख की चिन्ता क्यों न छनाती हो। दुःख तो अपना साथी है, कवि स्वयं एक राह है – अतः उन्होंने स्थितप्रज्ञ रहकर जीवन झेलने का पन किया। वास्तव में निराला जी के कविताओं में जीवन का सत्य मुखर है।

उनकी कविताओं में अद्वैतवादी दर्शन का छाप एवं मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण भी बहुत ही सुन्दर ढंग से उभरकर सामने आई है।

गीतात्मकता: केवल इतना ही नहीं आपकी कविताओं में गीतात्मकता और उसमें दूसरे भाषाओं का प्रभाव भी परिलक्षित होती है।

डॉ० पद्मसिंह शार्मा कमलेश कहते है कि 'विविधता और प्रयोग की दृष्टि से निराला जी अपने समय के सर्वश्रेष्ठ गीतिकार है।'[४]

निराला जी द्वारा रचित अर्चना, आराधना आदि ग्रंथ गीतों का ही संकलन है। महाकवि की कविताओं में खास तौर पर बंग साहित्य का स्वर सुनाई पड़ती है। निराला जी द्वारा रचित नये पत्ते एवं गीतिका के गीतों में रवीन्द्रनाथ का प्रभाव दिखाई पड़ती है। नये पत्ते में एक कविता है कुत्ता भौंकने लगा उसकी कुछ पंक्तियाँ है:

'आज ठण्डक अधिक है
बाहर ओले पड़ चुके हैं,
एक हफ्ते पहले पाला पड़ा था
अरहर कुल की कुल मर चुकी है
हवा हाड़ तक बेध जाती है।'

ये पंक्तियाँ कवीन्द्र रवीन्द्र की निम्नलिखित पंक्तियों से प्रभावित है:

'आज ठाण्डा किछू बेशी
बाइरे पड़छे शिल
हाप्ता खाने आगे झले छे बरफ
अड़रेर कुल के कुल गेछे मरे
हावा हाड़ेर भीतर जाच्छे विंधे।।'

गीतिका की तो कई रचनाएँ, रवीन्द्रनाथ का अविकल अनुवाद है। गीतिका के उनतालिसवें गीत का यह चरण:

एक स्वप्न तम जग नयनों में
खिला रही सुख-हुम अयनों में

रवीन्द्रनाथ के 'चित्रा' की निम्नलिखित पंक्तियों से साम्य रखता है:-

एकटि स्वप्न आधार जगत नयने,
फुल्ल सुखेर द्रुम जीवनेर अयने।

गीतिका के ही सत्तरवे गीत का प्रथम चरण है:-

'टूटे सकल बन्ध
कली के दिशा - ज्ञान गत हो बहे गन्ध'

इस गीत पर भी रवीन्द्रनाथ के इन पंक्तियों का प्रवाव दिखाई पड़ती है:-

'टूटे कलीर सकल बन्ध
छूटे अन्ध आवेगे गन्ध।।'[५]

मूलत निराला जी के अनेक कविता एवं गीतों पर रवीन्द्रनाथ का प्रभाव देखी जा सकती है। बंग साहित्य के साथ उनका एक मधुर सम्बन्ध था और शायद इसलिए उनके कविताओं में कवीन्द्र का स्वर सुनाई देती है।

निष्कर्ष:

छायावाद एवं निराला के काव्य में उभरे विभिन्न दृष्टिकरण अपने आप में एक ऐसा विषय है जहाँ पर केवल मात्र छायावादी विशेषताएँ ही नहीं इसके उपरान्त भी कुछ कथा ऐसा है जो निराला के काव्य में दृष्टिगोचर होते हैं। चाहे वह आध्यात्मिकता का हो या पिर मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण सब कुछ मानो उनके काव्य में उभरकर सामने आएं हैं।

वस्तुत हम कह सकते हैं कि छायावादी काव्य धारा में कवि निराला की एक अलग पहचान रही है।

संदर्भ ग्रंथ

१. हिन्दी साहित्य का इतिहास शुक्ल रामचन्द्र पृ ६६८
२. आधुनिक हिन्दी काव्य डॉ० (सं) सिंह सत्यनारायण पृ ०६

Murazar College Estd.-1989 Murazar, Hojai (Assam)
Principal MURAZAR COLLEGE P.O. Murazar Hojai (Assam)

Murazar College Estd.-1989 Murazar, Hojai (Assam)

३. आधुनिक हिन्दी काव्य डॉ० (सं) सिंह सत्यनारायण पृ ०७

४. निराला का काव्य लेख (सं) शार्मा पद्मसिंह कमलेश पृ १४१

५. वसुमती रवीन्द्रनाथ के समस्त उदाहरण वसुमती (कोलकाता) से लिया गया है।

सहायक ग्रंथ

१. निराला डॉ० शार्मा रामविलास

२. आधुनिक हिन्दी काव्य डॉ० सत्यनारायण सिंह- विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

३. छायावादी काव्य मे सौन्दर्यो दर्शन डॉ० सुरेश चन्द्र त्यागी- अनुराधा प्रकाशन, मेरठ

४. क्रान्तिकारी कवि निराला डॉ० बच्चन सिंह- विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

५. कवि निराला नन्द दुलारे बाजपेयी, वाणी बितान प्रकाशण, वाराणसी

६. काव्य का देवता निराला विश्वम्वर मानव-लोकभारति प्रकाशण, इलाहवाद

७. महाप्राण निराला गंगा प्रसाद पाण्डेय- लोकभारति प्रकाशण, इलाहवाद

८. छायावाद के प्रतिनिधि कवि डॉ० विजयपाल सिंह- विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

९. हिन्दी साहित्य का इतिहास डॉ- नगेन्द्र- नेशनेल पब्लिशिंग हाउच, नई दिल्ली

१०. संचयिता रामधारीसिंह दिनकर-भारतीय ग्रंथ निकेतन, नई दिल्ली

११. अपरा निराला-भारती भण्डार, इलाहावाद

१२. गीतिका निराला-भारती भण्डार, इलाहावाद

१३. तुलसीदास निराला-राज कमल प्रकाशन, नई दिल्ली

१४. निराला काव्य में सांस्कृतिक चेतना जगदीश चन्द्र- भारतीय ग्रंथ निकेतन, नई दिल्ली

❑❑❑

24

कवि श्री निराला की कविताओं में परिलक्षित अरविन्द दर्शन का प्रभाव

Dr. Balaji Naik L.
Faculty, Dept. of Hindi,
Jnanabharathi campus Bangalore University
Bangalore

****

भुमिका:

श्री अरविन्द ने भारतीय दर्शन एवं वेद-उपनिषदों से अत्यधिक प्रभावित होकर जगत्-पसिद्ध काव्य-ग्रंथों की रचना की है । अधुनिक युग में बहुत से कवि-गण उनसे और उनके दर्शन से प्रभाव ग्रहण कर चुके हैं । लगभग सभी भारतीय भाषाओं के कवि-लोग किसी न किसी रूप में श्री अरविन्द से अवश्य प्रभावित हुए हैं । हिन्दी के सुमित्रानंदन पंत, महादेवी वर्मा, अज्ञेय, निराला, सियाराम शरण गुप्त, नरेश मेहता, दिनकर आदि कवियों की कविताओं पर श्री अरविन्द के दार्शनिक तत्वों का प्रभाव पड़ा है । प्रस्तुत आलेख में श्रेष्ठ छायावादी, रहस्यवादी कवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला पर अरविन्द दर्शन के प्रभाव का निरूपण किया जा रहा है ।

श्री अरविन्द जीवन-जगत के शाश्वत तत्व में विश्वास प्रदर्शित करते हैं। अरविन्द दर्शन के प्रभाव के कारण निरालाजी भव-सागर पार करने हेतु परमसत्ता की कृपा को आवश्यक बताते हैं। सांसारिक झंझट से मुक्त होने की आकांक्षा में अरविन्द दर्शन का प्रभाव दृग्गोचर होता है । अरविन्द दर्शन में 'परम दर्शन' की इच्छा को शाश्वत अभिव्यक्ति मिली है । निराला के काव्य में एतद्वत आकांक्षा मुखरित है । अरविन्द दर्शन एवं निराला के काव्य दोनों में स्वतंत्रता की चेतना की आराधना हुई है । दोनों शांति को परमात्मा की कृपा मानते हैं । जन्म-मरण के शाश्वत तत्वों को अरविन्द दर्शन तथा निराला के काव्य में सक्षम अभिव्यक्ति मिली है । दोनों महापुरुषों के दर्शन में नारी को जगत्जगनी का स्थान मिला है । अरविन्द एवं निराला दोनों की दार्शनिक चेतना में माया मुक्ति को प्रश्रय मिला है ।

आध्यात्मिक मिशक का प्रश्रय लेकर निरालाजी अपनी कविता में यह सिद्ध करते है कि कोई परिश्रम व्यर्थ नहीं जाता अर्थात जप-तपआदि कभी असफल नहीं होते । अरविन्द बार-बार यह सत्य प्रकट करते हैं कि भगवान उन्हीं को अपनाते है, जो उनका ध्यान-मनन करते हैं । निराला पर परिलक्षित अरविन्द दर्शन के तत्वों का निरूपण इस आलेख की महत्वपूर्ण उपलब्धि है ।

Principal MURAZAR COLLEGE P.O. Murazar Hojai (Assam)